International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 02-08-2019; Accepted: 04-09-2019; Published: 13-10-2019
Volume 1; Issue 2; 2019; Page No. 03-06

दिशाहीन होती युवापीढ़ी एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

कृष्ण कुमार शर्मा
(शोधार्थी) उच्च शिक्षा और शोध संस्थान (विश्व विद्यालय विभाग) दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा मद्रास स्नातकोत्तर केन्द्र, धारवाड़, कर्नाटक, भारत

सारांश
जब किसी के ह्रदय की वेदना अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाती है तो साधारण व्यक्ति हो या कितना भी गंभीर इंसान ही क्यों न हो हर कोई अपनी अभिव्यक्ति प्रकट करने के लिए आतुर हो जाता है, और यही मेरे साथ भी हुआ है| आज जब मैं युवाओं को देखता हूँ तो देश और उनके भविष्य को सोचकर मन सिहर उठता है|
आँखों में उम्मीद के सपने, नयी उड़ान भरता हुआ मन, कुछ कर दिखाने का दमखम और दुनिया को अपनी मुट्ठी में करने का साहस रखने वाला युवा कहा जाता है। युवा शब्द ही मन में उडान और उमंग पैदा करता है। उम्र का यही वह दौर है जब न केवल उस युवा के बल्कि उसके राष्ट्र का भविष्य तय किया जा सकता है। आज के भारत को युवा भारत कहा जाता है क्योंकि हमारे देश में असम्भव को संभव में बदलने वाले युवाओं की संख्या सर्वाधिक है। आंकड़ों के अनुसार भारत की 65 प्रतिशत जनसंख्या 35 वर्ष आयु तक के युवकों की और 25 साल उम्र के नौजवानों की संख्या 50 प्रतिशत से भी अधिक है। ऐसे में यह प्रश्न महत्वपूर्ण है कि क्या हमारी युवापीढ़ी दिशाहीन हो रही है ? महत्वपूर्ण इसलिए भी यदि युवा शक्ति का सही दिशा में उपयोग न किया जाए तो इनका जरा सा भी भटकाव राष्ट्र के भविष्य को अनिश्चित कर सकता है।

मूल शब्द: दिशाहीनता, मार्गान्तरण, लक्ष्यहीनता, दिग्भ्रमिता, मनमानी नकारात्मकविचार, जीवन निर्माण

प्रस्तावना

आज जब मैं समाज की स्थिति और उसकी संस्कृति एवं परम्परा तथा संस्कारों की ओर ध्यान देता हूँ तो, अनायास ही मैं अतीत में चला जाता हूँ| उस समय इतनी चकाचौंध करने वाली तमाम (आकर्षण पूर्ण) सुविधाएँ न थी| हालांकि उस समय इतनी उच्च स्तर की शिक्षा और शिक्षण संस्थाएं भी नहीं थी किन्तु नि:संदेह बच्चों में संस्कार था| बच्चे अपने माता-पिता ही नहीं बल्कि पड़ोसियों की भी इज्जत और आदर करते थे| यही नहीं कहीं गलती से रास्ते में कोई बूढा या असहाय दिख जाता थो तो पक्का उसकी मदद करते थे| तब और अब में इतना अंतर क्यों हुआ, जब मैने इसका कारण जानने की कोशिश की तो लोग कहते मिले, कि ज़माना बदल गया है "शर्माजी" ! क्या संस्कार को भूल जाना ही विकास है ? क्या आज की नई पीढ़ी माता-पिता का तिरस्कार या उनकी अवहेलना करके उनकी बातें न मानने में ही अपना विकास समझ रही है ? यदि ऐसा है तो मेरे विचार से यह पूर्णतया गलत है क्योंकि बिना माता-पिता के आशीष के तो भगवान् भी किसी का साथ नहीं देता| अक्सर देखने को मिलता है, कि बच्चों को उत्तम सुविधाएं प्रदान करने के लिए माता-पिता अपने लिए सारी चीजों का त्याग करके दिन रात कठिन से कठिन काम करते हैं| उनकी इच्छा होती है कि जो कुछ भी अभाव उन्होंने अपने जीवन में सहा है उनके बच्चों को वह न झेलना पड़े| किन्तु आज की युवापीढ़ी उनके त्याग और श्रम को महत्व न देते हुए तब हद पार कर देती है जब वे माता-पिता के द्वारा किये जाने वाले कामों को यह कहकर याद दिलाते हैं, कि जो आप कर रहे हैं वो तो आपका फ़र्ज है|

विश्लेषण

हमेशा जोश और जुनून से सराबोर रहने वाली युवा पीढ़ी ही देश का भविष्य है। आज की शिक्षा ने नई पीढ़ी को संस्कार और समय किसी की समझ नही दी है। यह शिक्षा मूल्यहीनता को बढाने वाली साबित हुई है। अपनी चीजों को कमतर करके देखना और बाहरी सुखों की तलाश करना इस जमाने को और विकृत कर रहा है। परिवार और उसके दायित्व से टूटता सरोकार भी आज जमाने के ही मूल्य है। अविभक्त परिवारों की ध्वस्त होती अवधारणा, अनाथ माता-पिता, फ्लैट्स में सिकुड़ते परिवार, प्यार को तरसते बच्चे, नौकरों, दाईयों एवं ड्राइवरों के सहारे जवान होती नई पीढ़ी हमें क्या संदेश दे रही है ? यह बिखरते परिवारों का भी जमाना है। इस जमाने ने अपनी नई पीढ़ी को अकेला होते और बुजुर्गों को अकेला करते भी देखा है। बदलते समय ने लोगों को ऐसे खोखली प्रतिष्ठा में डूबो दिया है जहाँ अपनी मातृभाषा में बोलने पर मूर्ख और अंग्रेजी में बोलने पर समझदार समझा जाता है।

संचार क्रांति का दुरपयोग चरम पर है। मोबाइल हर युवा के हाथ में ही नहीं, बल्कि प्राइमरी स्कूल से ही बस्ते में पहुँच अबोध बच्चों की जिन्दगी का अहम हिस्सा बन रहा है। एस.एम.एस. और वीडियो का शौक इतना बढ़ चुका है कि वे उसी में मस्त हैं और अपने भविष्य को लेकर बेखबर। ऐसे में शिक्षा का क्या अर्थ रह जाता है?

पहले युवा का मतलब होता था कि, नित नई-नई चुनौतियों का सामना करने को तैयार रहना और संकल्प शक्ति ऐसी कि जो एक बार करने की ठान लें तो लाख मुश्किलें भी उसको बदल न पाएं इसके विपरीत लेकिन आज की युवा पीढ़ी को शायद अपनी इन ताकतों का अंदाजा नहीं है कि वह अगर चाहे तो इस देश की सारी रूप-रेखा ही बदल सकती है। अपने हौसले और जज्बे से समाज में फैली सारी बुराइयों को जड़ से उखाड़ फेंक सकती है। इन बातों से अनजान आज की युवा पीढ़ी अपने ही हाथों अपने जीवन और भविष्य को बर्बाद करने के रास्ते पर चल पड़ी है। बाहरी दिखावटों, पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित होकर अपने आदर्शों और संस्कारों को खोती चली जा रही है। जोश, जुनून, दृढ़ संकल्प, इच्छाशक्ति, हौसले की जगह नशा, वासना, लालच, हिंसा उनके जीवन में शामिल हो गए हैं। दिन-प्रतिदिन आज की युवा पीढ़ी दिशाहीन होकर बुराई और अपराधों के गर्त में गिरती चली जा रही है। युवा पीढ़ी को दिशाहीन बनाने वाली बुराइयों पर एक नजर:-

1. **नशा:** एक हाथ में सिगरेट और दूसरे में शराब लिए पार्टियों में युवाओं को देखा जाना अब आम हो चला है। लड़के तो लड़के अब तो लड़कियाँ भी सिगरेट, शराब पीने में पीछे नहीं हैं। आज के युवाओं की पार्टी बिना नशे के अधूरी समझी जाती है। मेट्रो की तर्ज पर अब यह कल्चर देश के छोटे शहरों में भी पैर पसारने लगा है। बात सिर्फ सिगरेट, शराब तक ही सीमित नहीं रह गई है, गांजा, चरस, अफीम, भांग और ड्रग्स तक भी पहुँच चुकी हैं। मजे के लिए किया गया यह शौक कब उनकी जिंदगी का अहम हिस्सा बन जाता है और कब वे इसकी गिरफ्त में आ जाते हैं उन्हें पता भी नहीं चलता। कल की चिंता छोड़ सिगरेट के धुंए के छल्ले उड़ाती आज की युवा पीढ़ी एक फुर्तीला चीता न होकर बीमार शेर बन कर रह गई है। जिसे सिर्फ नाम से जाना जाता है काम से नहीं।
2. **हिंसा:** नशे और वासना का आदी आज का युवा हिंसक और गुस्सैल प्रवृत्ति का भी शिकार होता जा रहा है| आए दिन उनके लड़ाई-झगड़े होते ही रहते हैं। देश में हो रही आपराधिक गतिविधियों में 65 प्रतिशत युवाओं की भागीदारी होती है। अपने बेकाबू गुस्से के चलते युवा किसी की जान लेने से भी नहीं चूकते। आज कितने ही युवा जघन्य अपराधों के दलदल में फँसते ही चले जा रहे हैं। पढ़ने-लिखने और भविष्य संवारने की जगह वे अपनी जिंदगी गुंडागर्दी करने, दहशत फैलाने, लोगों को परेशान करने में व्यतीत करते है। हिंसक होने के साथ ही आज कई युवा संस्कार विहीन भी हो गए हैं। बड़ों के लिए आदर, छोटों के लिए प्यार तो उनके मन में बचा ही नहीं है। आँखों पर अभिमान की पट्टी बांधे खुद को सारे संसार का शहंशाह मानने लगे हैं।
3. **लालच:** इन बुरी लतों के साथ-साथ आज के युवा लालची भी हो गए हैं। जितनी चादर उतने ही पैर पसारने की यह कहावत उन्हें बेमानी सी लगती है। उन्हें अपनी चीजों से कभी आत्मसंतुष्टि नहीं होती। उन्हें हमेशा दूसरों की चीजें ही भाती हैं। उनका मानना होता है कि जब तक सपने ऊँचे नहीं होगें तब तक आप उसे पाने की कोशिश नहीं करेगें| कई बार तो इन वस्तुओं को पाने के लिए वे किसी भी हद से गुजर सकते हैं। उनका यही लालच उन्हें अपराधी बना देता है। बदलते दौर की चकाचौंध उन्हें लालची और स्वार्थी बनाती जा रही है।
4. **धैर्य की कमी:** अधीरता लालच की जननी है और यही आज के युवाओं की सबसे बड़ी कमजोरी है। धैर्य की कमी के कारण आज का युवा सब चीजें बस जल्द से जल्द पाना चाहता है। आगे बढ़ने के लिए वे कड़ी मेहनत करने की बजाय शॉर्टकट्स ढूंढने में लगे रहते हैं। कम समय में सारी आधुनिक चीजों को पाने के लालच में उनमें समझदारी की कमी नजर आती है। भोगविलास के आदि आज के युवाओं में उस लगन, मेहनत, जोश, उमंग और धैर्य की कमी है जिसके बलबूते पर स्वामी विवेकानंद ने युवाओं से उम्मीदें लगाई।

अपने विचारों और आदर्शों के कारण युवा युग-पुरुष कहे जाने वाले स्वामी विवेकानंद जी का जन्मदिन हर साल युवा दिवस के रूप में मनाते हैं। उनको याद करके हम औपचारिकता तो निभा लेते हैं, उनके विचारों को भी स्मरण कर लेते हैं, लेकिन क्या आज की युवा पीढ़ी को गलत दिशा में जाने से रोकने का प्रयास करते हैं? क्या यह जानने की कोशिश करते हैं कि आज का युवा देश के भविष्य निर्माण में कितना सहभागी है? जरा सोचिए, क्या हम इस पीढ़ी को देश का भविष्य कहेंगे जो खुद अपने भविष्य को लेकर दिशाहीन है? स्वामी विवेकानंद में मेधा, तर्कशीलता, युवाओं के लिए प्रासंगिक उपदेश जैसी अनेक ऐसी बातें हैं जिनसे युवा प्रेरणा ले सकते हैं। स्वामीजी को युवाओं से बहुत प्यार था। वे कहा करते थे विश्व मंच पर भारत की पुनर्प्रतिष्ठा में युवाओं की बहुत बड़ी भूमिका है। स्वामीजी का मत था, 'मंदिर जाने से ज्यादा जरूरी है युवा फुटबॉल खेले। युवाओं के स्नायु फौलादी होनी चाहिए क्योंकि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन निवास करता है।' दुर्भाग्य से खेल-कूद, व्यायाम इनके जीवन से दूर होते जा रहे हैं क्योंकि दिन भर मोबाइल, इंटरनेट, फेसबुक इन्हें व्यस्त रखते हैं। सवाल है कि कौन चिंता कर रहा है देश के युवापीढ़ी की, जो सबसे बहुमूल्य धरोहर है।

बड़े दुःख के साथ कहना पड़ रहा है कि आज हमारी युवापीढ़ी दिशाहीन होती जा रही है| वह न अपनी सभ्यता और संस्कृति का सम्मान कर पा रही है, और न ही उसे पाश्चात्य शैली की वास्तविकता का पता है| बस वह उसकी चकाचौंध की तरफ़ आकर्षित हो मृगतृष्णा का शिकार हो रहा है| दिखावा आज हक़ीकत पर हावी होता जा रहा है| लोग संबंध, फ़र्ज और सेवा भाव जैसी भावना तथा भावनापूर्ण कार्य भूलते जा रहे हैं| बस सभी के लिए पैसा ही इन सब पर भारी होकर सर्वोपरि होता जा रहा है| भावना के साथ-साथ लोगों के विचार भी संकुचित होते जा रहे हैं|

एक अध्ययन के अनुसार, जिन परिवारों का मुखिया आधुनिक बुराइयों (शराब, शबाब, झूठी शानबाजी) से दूर होता है, उनके बच्चे अपेक्षाकृत अधिक संयमी, मितव्ययी तथा अनुशासित होते हैं। ऐसे परिवेश में पले-बढ़े बच्चों की देश के उच्चशिक्षा संस्थानों में भी सर्वाधिक भागीदारी है जबकि छोटी आयु से ही आधुनिक साधनों तथा खुली छूट प्राप्त करने वालों की सफलता का अनुपात काफी कम है। क्या यह सत्य नहीं कि 'पहले तो हम स्वयं-ही अपने बच्चों को जरूरत से ज़्यादा छूट देते हैं, पैसा देते हैं और भूल कर भी उनकी गतिविधियों पर नजर नहीं रखते, लेकिन बाद में, उन्हीं बच्चों को कोसते हैं कि वे बिगड़ गए। आखिर यह मानसिकता हमें कहाँ ले जा रही है? आज शहर का हर युवा छोटे-से-छोटे काम के लिए वाहन का सहारा लेता है। उसके लिए शारीरिक श्रम और चंद कदम भी पैदल चलना शान के खिलाफ होता है। आश्चर्य तो तब होता है जब, घर से महज कुछ मीटर दूर पार्क में सैर करने के लिए भी लोग कार पर जाते हैं। यह राष्ट्रीय संसाधनों के दुरुपयोग से ज्यादा-चारित्रिक तथा मानसिक पतन का मामला है, इसकी तरफ कितने लोगों का ध्यान हैं? दरअसल आज 'जैसे भी हो, पैसा कमाओ और उसे दिखावे-शानबाजी पर उड़ाओ का प्रचलन है। विज्ञापनों का बहुत बड़ा दोष है जो युवाओं को ऐसे कामों के लिए उत्तेजित करते हैं। इसका अर्थ यह भी नहीं कि देश की सम्पूर्ण युवा पीढ़ी ही पथभ्रमित है। आज हमारे बहुत से युवा अनेक कीर्तिमान स्थापित करने की दिशा में भी अग्रसर है। वास्तव में युवा शक्ति बड़ी प्रबल शक्ति है। युवा शक्ति के बल पर ही देश, दुनिया और समाज आगे बढ़ सकता है, लेकिन इसके लिए उस शक्ति को नियंत्रित करना भी बहुत जरूरी है। अब तक हुए राजनीतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक क्रांति की बात करें तो सभी क्रांतियों के पुरोधा युवा रहे हैं। युवा शक्ति सदैव देश को आगे बढ़ाने में सहायक बनती है। समाज के युवा दुर्व्यसन मुक्त होंगे, बुराई मुक्त होंगे तो हम बड़ी से बड़ी उपलब्धियाँ भी अर्जित कर सकेंगे।

मेरा यह मानना है कि आज की हमारी युवापीढ़ी बहुत उर्जावान है, लेकिन वह उर्जा विकास की ओर उन्मुख नहीं हो रही है क्योंकि आज की युवापीढ़ी अपनी जिम्मेदारियों के प्रति गौर नहीं करती, वह स्वयं मात्र के लिए ही सबकुछ करना चाहती है| विकास बिना समाज, सभ्यता और संस्कृति की उन्नति के संभव नहीं होता, क्योंकि विकास चंद लोगों का धनाढ्य होना नहीं होता| विकास का तात्पर्य मात्र खूब पैसा कमाना और ऐश्वर्य प्राप्त करना नहीं है, बल्कि सही रूप में विकास अपनी सभ्यता, संस्कृति के आधार पर आचरित होकर लोगों का सहयोग करके समाज की उन्नति में अपना हाँथ बटाना और इसी मार्ग पर चलने से स्वयं की, परिवार की, समुदाय की, समाज की और आखिर में राष्ट्र की उन्नति संभव है|

एक ताजा शोध के अनुसार अब युवा अधिक उग्र स्वभाव के हो गए हैं। वे किसी से घुलते-मिलते नहीं। इन्टरनेट के बढ़ते प्रयोग के इस युग में रोजमर्रा की जिंदगी में आमने-सामने के लोगों से रिश्ते जोड़ने की अहमियत कम हो गई है। मर्यादाहीनता के इस भयानक दौर में ये अनुशासन की सारी सीमाएँ लाँघ कर इतने निरंकुश, स्वच्छन्द, स्वेच्छाचारी और उन्मुक्त हो चले हैं कि अब समाज को किसी लक्ष्मण रेखा में बाँधना शायद बहुत बड़ा मुश्किल हो गया है। ऐसे में आज की युवा पीढी को टूटने से बचाने के लिये सही राह दिखाने के लिये जरूरी है कि लोग अपनी नैतिक जिम्मेदारी को समझे और यह समझे कि हमारे बच्चे इतने पथभ्रष्ट क्यों हो रहे हैं ? जरा-जरा सी बात पर जान देने और लेने पर क्यो अमादा हो जाते हैं ? इन की रगो में खून की जगह गरम लावा किसने भर दिया है ? वास्तव में घर को बच्चे का पहला स्कूल कहा जाता है। आज वही घर बच्चो की अपनी कब्रगाह बनते जा रहे हैं। फसल को हवा, पानी, खाद दिये बिना बढिया उपज की उम्मीद सरासर गलत है। बच्चो साथ संकुचित व्यवहार हमारे बुढापे पर भी प्रश्न चिन्ह लगा

रहा है। आज पैसा कमाने की भागदौड में जो अपराध लोग अपने बच्चो को समय न देकर कर रहे हैं वो सिर्फ घर परिवार ही नही देश और समाज के लिये बहुत ही घातक सिद्ध हो रहा है।

निष्कर्ष

क्या यह सत्य नहीं कि आज की पीढ़ी जो कुछ सीख पायी है उसमें हमारा दोष भी सर्वाधिक है। इन परिवेशीय हालातों में अंकुरित और पल्लवित नई पीढ़ी को न संस्कारों की खाद मिल पायी, न स्वस्थ विकास के लिए जरूरी वातावरण। मिला सिर्फ प्रदूषित माहौल और नकारात्मक भावभूमि। आज का युवा अधिकतर मामलों में नकारात्मक मानसिकता के साथ जीने लगा है। उसे दूर-दूर तक कहीं कोई रोशनी की किरण नज़र नहीं आ रही। वर्तमान स्थिति के लिए हमारे स्वार्थ और समझौते जिम्मेदार हैं जिनकी वजह से हमने सिद्धान्तों को छोड़ा, आदर्शों से किनारा कर लिया और नैतिक मूल्य तक दाँव पर लगा दिए। और वे भी किसलिए, सिर्फ और सिर्फ अपनी वाहवाही कराने के लिए| हालात भयावह होते जा रहे हैं, हमें इसका अंदाजा नहीं लग पा रहा है क्योंकि हमारी बुद्धि परायी झूठन खा-खाकर भ्रष्ट हो चुकी है। हम अपने आदर्श को भूल कर आज के चकाचौंध को अपनाने में लगे हैं|

यह सच है कि सम्पूर्ण युवा वर्ग इन बुराईयों की चपेट में नहीं है, यह भी सच है कि इसी देश के युवाओं ने अपना एक स्वर्णिम आकाश तैयार किया है, खेल से लेकर राजनीति तक और उद्योग से लेकर कला तक लेकिन जो बुराई में जकड़े हैं, क्या वह इस देश की जिम्मेदारी नहीं है? युवा दिवस पर देश के हर युवा से फिर विवेकानंद का आह्वान है, उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक एक सात्विक और शुद्ध मंजिल प्राप्त न हो जाए... देश को तुम्हारी जरूरत है।

अंततः मैं आशा करता हूँ, कि वर्तमान दिशाहीन हो रही युवापीढ़ी अपने आदर्शों की ओर उन्मुख होकर लक्ष्य प्राप्त करेगी और विकास की ओर अग्रसर होगी| इसी में स्वयं का तथा देश का हित है|

सन्दर्भ सूची

1. क्या भारतीय युवा भटक रहा है ? श्री स्वप्ना कुमार
2. युवा भारतः वरदान या चुनौती ? डॉ. विनोद बब्बर
3. युवापीढ़ी और संस्कार श्रीमती बीना चंदेल
4. युवापीढ़ी नहीं देश का भविष्य बिगड़ रहा है ? शाबाद जाफर